गाँधी–युग में स्त्रियों में सामाजिक जागरण

डॉ0 पुष्पा कुमारी

गाँधी जी अपने सत्य और अहिंसा की लड़ाई में स्त्रियों के महत्व को स्थान दिये हैं। उन्होंने नारी उत्थान के हरेक पहलू पर सूक्ष्म रूप से मार्ग दर्शन किया है। वे परदा प्रथा को नारी उत्थान के मार्ग में बाधक समझते थे। उन्होने उसके उन्मूलन के लिए आन्दोलन किया। बाल–विवाह सतीप्रथा जैसी कुरीतियों को दूर करने का उपाय किया, विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया तथा स्त्री शिक्षा पर जोर दिया।

गाँधी जी को पूर्ण विश्वास था कि देश का भविष्य औरतों पर निर्भर है। वे औरतों को इतना स्वतंत्र बनाना चाहते थे, जिनसे वे अपनी मानसिक शक्ति को उन्नत कर सकें। वे परदा प्रथा के कट्टर विरोधी थे। वे जानते थे, कि इस प्रथा के रहते कोई समस्या सुलझाया नहीं जा सकता तथा वह अपने किसी उद्देश्य को प्राप्त नही कर सकते है। राष्ट्रवादी विचार धारा में महिलाओं में राजनितिक जागृति के साथ–साथ समाजिक जागरण पर बल दिया गया। स्त्रियों के बारे में उनका विचार था कि औरत मर्द का साथी हैं तथा उसकी मानसिक क्षमता बराबर है।